D.El.Ed. IInd Sem

Subject :- S.St

Topic :- प्रति-चक्रवात

प्रति-चक्रवात चक्रवात की बिल्कुल विपरीत स्थिति है। इसके केन्द्र मे उच्च वायुदाब तथा बाहर की ओर निम्न वायुदाब पाया जाता है। बाहर की ओर निम्न वायुदाब होने के कारण इसमे वायु का प्रवाह केन्द्र से बाहर की ओर होता है। प्रति चक्रवातो मे वायु प्रवाह उत्तरी गोलार्द्ध मे घड़ी की सुइयो के अनुकूल तथा दक्षिणी गोलार्द्ध मे घड़ी की सुइयो के प्रतिकूल होता है। इनमे पवने सामान्यत: मन्द गति से चलती है। प्रति चक्रवात प्राय: दो चक्रवातो के मध्य पाया जाता है। चक्रवातो के बाद ही इनका आगमन होता है। परन्तु इनका कोई निश्चित मार्ग नही होता। इसमे समदाब रेखाएँ वृत्ताकार अथवा गोलाकार होती है। प्रति-चक्रवात इतने निष्क्रिय होते है कि एक ही स्थान पर देर तक रुके रहते है।

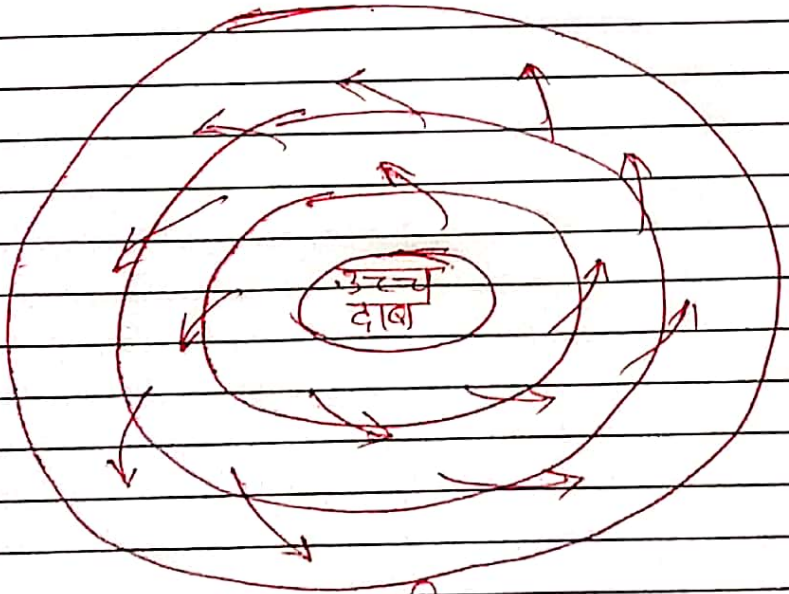

प्रति-चक्रवात

Scanned with CamScanner